UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 13 जिसके हम मामा हैं (मंजरी)

महत्त्वपूर्ण गद्यांश की व्याख्या

भारतीय नागरिक .....पेटी लेकर भाग गया।

संदर्भ:
प्रस्तुत गद्य खण्ड हमारी पाठ्यपुस्तक मंजरी' के 'जिसके हम मामा हैं' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी हैं।

प्रसंग:
एक सज्जन वाराणसी, गंगास्नान को गए। वहाँ एक लड़के मुन्ना ने भानजा बनकर सज्जन मामा जी के वस्त्रों को उठा लिया। स्नान के बाद सज्जन तौलिया लपेटे उसे ढूंढते रहे।

व्याख्या:
लेखक शरद जोशी ने उपर्युक्त रूपक के सहारे हम सभी पर व्यंग्य किया है। हम सब भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर काशी गंगास्नान करने वाले सज्जन मामा जी की तरह हैं। हम प्रजातन्त्र की गंगा में डुबकी लगाते हैं। चुनाव के समय एम०पी०, एम०एल०ए० बनने के इच्छुक उम्मीदवार चरणों में आकर गिर जाते हैं, कहते हैं, "पहचाना नहीं"। हम समस्याओं का तौलिया लपेटे पाँच साल तक इन्हीं एम०पी० आदि को ढूंढते रहते हैं, लेकिन ये हमें नहीं मिलते और हमारी समस्याएँ हल नहीं हो पातीं।

पाठ का सट (सारांश)

एक सज्जन गंगा स्नान करने वाराणसी गए। स्टेशन पर उतरते ही एक लड़के 'मुन्ना' ने "नमस्ते. मामा जी" कहकर चरण छुए और कहा, "पहचाना नहीं?" सज्जन जब गंगा स्नान करके आए, तब तक मुन्ना कपड़े आदि लेकर गायब हो गया। वह तौलिया लपेटे मुन्ना को इधर-उधर ढूंढते रहे परन्तु वह नहीं मिला। | हम सब भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर मामा जी की तरह ही हैं।
हम प्रजातन्त्र की गंगा में डुबकी लगाते हैं। हम समस्याओं का तौलिया लपेटे भानजे रूपी एम०पी०, एम०एल०ए० को ढूंढते रहते हैं। जो पाँच साल तक तो नहीं मिलता, परन्तु चुनाव के समय चरणों में गिरकर कहता है, "पहचाना नहीं?"

https://www.evidyarthi.in/